प्रात: क्लास 13-3-68 ओमशान्ति पिताश्री

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। वास्तव में इसको कहा ही जाता है रावण राज्य। हिंसा ही हिंसा है। हिंसा को कोस घर भी कहा जाता है। कसाई होते हैं ना बकरी को मारते हैं, यह भी हिंसा है। सब से बड़ी ते बड़ी हिंसा कौन सी है? काम कटारी चलाना। बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। एक दो पर काम कटारी चलाना यह है सब से बड़ी हिंसा। आधा कल्प है हिंसा, आधा कल्प है अहिंसा। पैसा को कोस कहा जाता है। बाप बैठ समझाते हैं यह है रावण राज्य। ऐसा कोई है नहीं जो विकार बिगर रह सके। साधू सन्त सन्यासी आदि सभी विकार से ही पैदा होते हैं। सारी दुनिया कोसखाना चलता ही रहता है। मंदिर में जितने ढेर मनुष्य जाते हैं, वहां ही फिर शादी के लिए हाल भी बनाये हुये हैं। गोया वह कोस घर हुआ ना। विकार के लिए ही शादी होती है। अभी भगवानुवाच: बेहद के बाप भगवान ने तो कहा है काम महाशत्रु है। इस पर जीत पहने अहिंसक बनने से तुम स्वर्ग के मालिक बन सकते हो। मैं आया ही हूं हिंसक दुनिया को अहिंसक बनाने तो फिर हिंसा थोड़े ही करनी चाहिए। हिंसा का कोई काम न करना चाहिए। बाबा ने इस पर मुरली भी चलाई थी। शिव के मंदिर भी हैं, वहां ही ल0ना0 का चित्र, वहां ही राम-सीता का चित्र, वहां ही फिर कोस घर बनाते हैं। कहां देवतायें अहिंसक, जो स्वर्ग में राज्य करते थे उनके मंदिरों में फिर कोस-घर बनाते हैं। इस समय सारी दुनिया को ही कोस-घर कहा जाता है। मंदिरों में शादी के लिए हाल बनाते हैं। पैसे बहुत हैं तो यही हिंसा की ख़यालात आती रहती। रावण राज्य है ना। अभी तुम बच्चे हिंसा नहीं करते हो। तुम जानते हो अभी अहिंसक दुनिया स्थापन हो रही है। तुम जानते हो इन देवताओं का राज्य था। जहां हिंसा बिलकुल नहीं थी। कोस नहीं करते थे। अभी कहते भी हैं बाबा हम पापात्मा बन गये हैं। एक दो को कोस करते रहते हैं। परन्तु अपने को पतित समझते नहीं हैं। बुधि बिलकुल तमोप्रधान बन गई है। राईट-रांग को समझ न सके। सतयुग है ही राईटियस वर्ल्ड। यह है अनराईटियस वर्ल्ड। बेहद का बाप कहते हैं एक दो पर काम कटारी न चलाना यह है सब से बड़ा पाप। काम महाशत्रु है। यह बहुत पापात्मा बनाते हैं। रावण राज्य में ही कोस-घर शुरू होता है। गिरते2 मनुष्य पापात्मा अजामिल जैसे बन पड़े हैं। जो देवतायें थे वही ड्रामा प्लेन अनुसार नीचे गिरते तमोप्रधान मनुष्य बने हैं। जब से बाम-मार्ग में गये हो तब से ही कोस-घर बनता आया है। इस समय तो फुल कोस-घर है। वहां ही मंदिर, वहां ही कोस-घर। मुरली में भी बाबा ने इस पर समझाया था। यहां भी बच्चे आते हैं कोई2 मंदिर बनाते हैं उस में हाल भी बनाते हैं शादियों के लिए। उन्हों को तुम समझा सकते हो। तुम तो समझते हो हम बाम-मार्ग में आये जैसे कि कसाई बन गये थे। बाप ने प्रुफ देकर समझाया यह सारी दुनिया कोस-घर है। आधा कल्प डबल अहिंसक अर्थात पवित्र रहते हैं। कसाई नहीं बनते। अभी बेहद का बाप कहते हैं कसाई बनना छोड़ दो। बाप को तुम ने बुलाया ही है कि आकर रास्ता बताओ। हम पावन बन जावें। कोई तो झट समझ जाते हैं। कोई2 बिख पर कितना झगड़ा करते हैं। बिरादरी से भी निकालने की कोशिश करे। शुरू से लेकर यह झगड़ा चलता आया है। शुरू में भी इन्हों को कहा गया था कि चिट्ठी ले आओ हम ज्ञान-अमृत फ्री पीने जाते हैं। सभीने फट चिट्ठी लिख कर दे दी। उनको यह थोड़े ही पता था सारा बिख बन्द हो जावेगा। पति लोग कहे बिख दो। वह कहे हम तो अभी ज्ञान-अमृत पी रहे हैं। हम बिख से देंगे। ज्ञान-अमृत छोड़ हम बिख क्यों खावें। जहां-तहां इस पर ही हंगामा होता आया है। समझते हैं यहां आने से मृत पीना बन्द हो जाता है। यह है ही कोस-घर। हेल। अभी इनको हेविन बनाना है। नर्क का अर्थ ही विष्य वैतरणी नदी। विष्य वैतरणी नदी में गोता खाते रहते हैं। वह है शिवालय, यह है वेश्यालय। बाबा तो कहते रहते हैं कोई अच्छा समझदार आदमी हो या मंदिर का ट्रस्टी हो उनको समझाओ। ट्रस्टी लोग भी कोस घर की सम्भाल करते हैं। उनको जब अमृत मिले तब पता पड़े। कोई को समझाने, बात-चित करने में सारा दिन लगाना चाहिए। महारथी, घोड़ सवार, प्यादे तो हैं ना। इस ज्ञान में विघ्न बहुत पड़ते हैं। अत्याचार इस

में बड़ी बहादुरी चाहिए। बाप में कब संशय होता है क्या। बाबा माना बाबा। सेमी बाबा तो होता नहीं। बेहद का बाबा है। बेहद का वर्सा देने आये हैं। हम ने बाबा को बुलाया है कि बाबा आकर पान बनाओ। अर्थात अब इस कोस से छुड़ाओ। अभी बाप कहते हैं इनको जीते तो तुम जगत-जीत बन जावेंगे। बाप आते ही हैं सब को रास्ता बताने। कहते हैं मैं हर कल्प आता हूं। तुमको कोसे-घर से निकाल स्वर्ग का मालिक बनाता हूं। इस लिए बाबा ने पर्चे भी छपवाई है तो हर एक अपने से पूछे हम स्वर्गवासी हूं या नर्कवासी हूं। परन्तु यह स्वर्ग है या नर्क। इतना भी समझते हैं नहीं। वह तो समझते हैं यही स्वर्ग है नहीं तो क्या है। और स्वर्ग में विकार होता नहीं। वह था रामराज्य। यह है रावणश राज्य। इसलिए इन पर्चों में भी सतयुगी अक्षर तरफ ल0ना0 का चित्र और कलियुगी अक्षर तरफ रावण का चित्र हो। तो क्लीयर समझे। हम उस दुनिया के वासी हैं या इस दुनिया के वासी हैं। रावण राज्य में हैं तो जरूर आसुरी बुद्धि होंगे। मनुष्यों को तो यह भी पता नहीं है। सूर्यवंशी जरूर ऊंच होंगे। चन्द्रवंशी उन से कम होंगे। वह फिर राम को ऊंच समझ लेते हैं। भक्त लोग हैं ना। कृष्ण के भक्तों की राम के भक्तों से दुश्मनी होती है। राम के भक्त को कृष्ण के भक्त से। उनकी खुशबूएं उनको न आवे नाक बन्द कर देते हैं। रावण राज्य के रसम-रिवाज़ ही बिलकुल अलग है। रामराज्य के रसम-रिवाज़ ही अलग। वह है हेविन, यह है हेल। बच्चे जानते हैं अभी बाप को बुलाया है आकर पतितों को पावन बनाओ। कैसे बनावेंगे यह थोड़े ही जानते हैं। बाप आकर बहुत सहज रास्ता बताते हैं। उठते-बैठते, चलते-फिरते, बाप को याद करना है। और2 सम्बन्धी बाद आद जो भी याद आते रहते हैं उनकी याद छोड़ अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करो तो तुम्हारे खाद निकल जावेंगे। कल्प2 तुम ऐसे ही मनुष्य से देवता, देवता से मनुष्य बनते हो। कितना सहज है। पुरुषार्थ तो सब करते रहते हैं, जैसे कल्प पहले किया था। जरा भी फर्क नहीं। फिर भी माया के जो आधा कल्प मुरीद बने हैं, तो वह मुरीदपना निकले कैसे। घड़ी2 बाप कहते हैं तुम मुझे याद करो ना। तुम ने ही बुलाया है, आत्मा बुलाती है बाबाआप आवेंगे तो हम आपे के ही बनेंगे। दूसरा न कोई। सिवाय आप के और हम कोई को याद नहीं करेंगे। बाप भीरोज़ कहते है मन्मनाभव। बाबा जो विश्व की बादशाही देते हैं उनको तुमशद नहीं करेंगे। मुझे बुलाया ही है आकर रास्ता बताओ। पावन बनाओ। वहां विकार होता ही नहीं। है ही योगबल। इसलिए योगबल का गायन बहुत है। योगबल की पैदाईश होती है। अहिंसक देवतायें कितने मीठे लगते हैं। अभी तुम बनने वाले हो। नर से नारायण बनने की युक्ति बाप ही बतलाते हैं। बहुत सहज है। तुम ने ही बाप को बुलाया है आओ आकर भक्ति का फल दो। भक्ति करते2 तमोप्रधान बन गये हैं। दुर्गति को पाया है। फिर बाप आकर फल देते हैं अर्थात सदगति देते हैं। भक्ति कोई कितनी भी करे, माला फैशास्त्र आद पढ़े लेकिन मुझे कोई भी मिल नहीं सकता। मैं आता ही हूं बहुत जन्मों के अन्त वाले जन्म में। सब से बहुत जन्मों के अन्त में तो तुम ही होंगे ना। जो फिर देवी देवता बनने वाले हो। मनुष्यों की कितनी पत्थर बुद्धि है जो कुछ भी समझते नहीं। कहते भी है हम पापी पतित नीच है। पतित कहा ही जाता है विकार में जाने वाले को। क्रोध वाले को नहीं कहा जाता। कितना बन्दर है। बुलाते भी हैं हे पतित-पावन ... परन्तु अपने को पतित समझते नहीं हैं। इसलिए मनुष्यों को लगाने लिए बाबा कहते हैं स्टीमलेनसे पर्चे गिराओ। मंदिरों में जहां शादियां होती है उनको समझाओ भगवान का मंदिर है ना। भगवानुवाच: काम महाशत्रु है। इन पी जीत पाये जगतजीत बनना है। बाप कहते हैं मामेकं याद करो। कल्प2 तुमको समझाता हूं। यह गीता है ना। पहले नम्बर में तुम ही बिछुड़े हो। आत्मा परमात्मा अलग रहे बहुकाल... से लेकर आये हैं पार्ट बजाने। तुम आलराउन्डर हो ना। तुमको ही कथा सुनावेंगे। जो आलराउन्डर ही नहीं उन को क्या ब तेलका। तुम्हारा धर्म बहुत सुख देने वाला है। विकारों से तो अभी नफरत आती है। यह निर्विकारी थे। वैष्णव का भी सच्चा अर्थ कोई नहीं समझते। तुम समझते हो हम विष्णु के सन्तान माना बन रहे हैं। तुम

रुद्र के माला हो। बाप कहते हैं विकार मे जाना तो महापाप है। इनके कारण भारत की क्या हाल हुई है। साधु सन्त आद सभी भक्ति मार्ग में हैं। ज्ञान तो एक बाप को ही है। वह गुरु लोग भक्ति के हैं। भक्ति माना दुर्गति। उन गुरुओं के फिर चरण धोकर पीते हैं। साधु लोगों को भी भ्रष्टाचारी तो कहेंगे ना। कोख से तो पैदा हुये हैं। उनका थोड़े पता है। वह समझ तो रोवलेशन हो जाये। अभी तो इन्हों की ही बड़ी राजाई है। आजकल तो दुनिया में देखो क्या हो रहा है। कोई किसकी मानता नहीं। पोप का भी नहीं मानते हैं। प्राईमिमिस्टर का भी नहीं मानते हैं। बिलकुल पत्थर बुधि हैं। खुद पत्थर बुधि होने कारण भगवान को भी पत्थर ठिकर में ठोक दिया है। अभी बाप सारी दुनिया को ही बदलते हैं। कलियुग ये सतयुग कौन बनाते हैं यह किसको भी पता नहीं। अभी तुमको महावीर बनना चाहिए। शादियों के लिए हाल बनाते हैं उनको समझाओ यह क्या एक तरफ मंदिर और वहां ही कोसघर। यह कोस कराना तो बन्द करो। शिव बाबा कहते हैं इन विकारों पर जीत पहनो तो जगत-जीत बनेंगे। बड़ी मंजिल है। बाप को यद नहीं करते हैं तो फिर मुझते है। बाबा को भूल जाते हैं। अरे बाबा को थोड़े ही भूलना चाहिए। बाप कहते हैं भल गृहस्थ व्यवहार मे रहो 8घंटा वह सर्विस करो। 8घंटा आराम करो। 8घंटा तो बस सर्विस में लगाओ। धीरे2 कदम बढ़ाते रहो। बाप कहते हैं कल्प2 ऐसे होता रहेगा। बिख के लिए तुम मार खाते रहेंगे। अभी आस्ते2 हड्डिया नर्क होती रहती है। सेना तुम्हारी बढ़ती जावेगी। फिर वह सेना हार खा लेंगे। तुम्हारे मे ताकत आवेगी। बाप को कहते हैं सर्वशक्तिवान। तो मनुष्य समझते हैं कुछ भी कर सकते हैं। बाप कहते हैं मैं आया हूं तुमको रास्ता बताने। बाकी ऐसे थोड़े ही कि मूर्दे को जिन्दा करूंगा। मुझे बुलाया ही है कि आकरपतितों को पावन बनाओ। काम कटारी चलाने वाले बड़े कसाई हैं। यह बहुत दुःख देने वाला है। इसलिए बाप कहते हैं इनको जीतो। कल्प2 तुम जीतते हो। रामराज्य तुम ही स्थापन करते हो। कितना नशा होना चाहिए। सतसंग तारे कुसंग बोरे। कुसंग है रावण का। सतसंग है राम का। राम वह नहीं जिसकी सीता चोरी हो गई। वह है भक्ति मार्ग की बातें। ज्ञान भक्ति फिर है वैराग्य। सारीपुरानी दुनिया से वैराग्य। अभीनाटक पूरा हुआ हम जाते हैं अपनेघर। बाप कहते हैं घर चलो। अभी यह पुराने कपड़े हो गये हैं। क्योंकि इन से हम बहुत2 पार्ट बजाया है। बहुत पुराना हो गया है। तो तुम बच्चों को अन्दर में आना चाहिए हम ब्रह्मा कुमार, कुमारियां अपने लिए स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। कोई हिंसा की बात नहीं। देवताओं को कहा जाता है अहिंसक परमोधर्म। यहां तो अबलाओं पर बहुत अत्याचार होते हैं। कसाई लोग हड्डियां भी तोड़ देते हैं। बाप समझाते हैं ये कोस खाना बन्द करो। पावन बनने बिगर वापस कब जा नहीं सकते हैं। बाप हेविन बना कर ही जावेंगे। अभी पढ़ना है नई दुनिया में फल मिलना है। तुम भक्त थे। अभी ज्ञान ले रहे हो। यह है सत्य ना0 की कथा। तीजरी की कथा। बाबा ज्ञान का तीसरा नेत्र दे रहे हैं। पावन भी बनना है। पतित बना तो फिर मुख से निकलेगा नहीं। काम महाशत्रु है। खुद मरते हैं तो दूसरे को कहेंगे कैसे। यह भी जानते हैं2 झाड़ बढ़ता जावेगा। जंगली आदमी फिर जंगल के सेपलिंग लगाते रहते हैं। सिरोमणी बनाते रहेत हैं। हो यह देवी देवताओं की सेपलिंग कहां वह। रात-दिन का फर्क है। वह जंगली काकाम करते हैं। तुम फूलों की सेपलिंग लगा रहे हो। इनसभीबातों को समझानाधारण करना है। सेन्टर भी खोलना है। जल्दी2घेराव डालना है। 2 शहरों में घेराव करेंगे तो आवाज़ निकलेगा। बाबाने यह भी कहा यह सालोग न बनाओ शंकराचार्य्यवाच: नारी नर्क का दवार है। तुम फिर कहते हो ज्ञान सागरपतित पावन त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच: नारी स्वर्ग का दवार हैं। तुम अभी स्वर्ग की दवार खोल रहे हो। बाप कहते हैंपवित्र बनो। काम महाशत्रु है। शंकराचार्य तो नहीं कहेंगे। वह तो पूजारी है ना। तुमको अभी ज्ञान मिला है तो तुम कह सकतेहो। ज्ञान और भक्ति की है रात। इसमें ही रहन करना पड़ता है। डरना थोड़े ही है। इसमें कोई संशय उठने की बात ही नहीं। बाप कहते हैं मैं आता ही हूं कोस खाने को हेविन बनाने। तुम बहुत भाग्यशाली हो। तुम पदमापदमभाग्यशाली हो। बच्चों को गुडमार्निंग। नमस्ते।